ISSN 2231-1629
Knowledge Resonance
IMPACT FACTOR 8.072
Janury-June 2024- Vol. 13 No. 1

भारत के विकास में कृषि क्षेत्र का योगदान

डॉ. सुरेंद्र गोविंदराव पोथारे
अर्थशास्त्र विभाग (उपप्राचार्य)
शरदचंद्र कॉलेज, बुटीबोरी, नागपूर

सारांश:-
भारत कृषि प्रधान देश हैं।भारत के कुल आबदी 60% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती हैं। उनका प्रमुख व्यवसाय कृषि हैं। आज भारत के किसान पारंपरिक कृषि से आधुनिक कृषि के क्षेत्र में बढरहा है। जो कृषि मे हरित क्रान्ति स्त्रोत है।जो 1960 बाद दिखाई दी।जिस में कृषि की उत्पादकता बढाने के लिये उन्नत बीज प्रजातीया,नवीनतम तकनिक और फसल संरक्षक बीमा योजना की आवश्यकता हैं।1960 फसल उत्पादन क्षम बढत दर्शाती हैं। जिसके द्वारा भारत मे कृषि क्षेत्र में परिवर्तन आये।इस हेतू सरकार द्वारा विभिन्न सुविधा कृषि के क्षेत्र में उपल्ब्ध कराये। जिस से बेरोजगार को कृषि में कार्य हेतू प्रेरना प्राप्त होगी। भारत का विकास तेजी से होगा। भारतीय अर्थव्यवस्था को दुसरे देशो के तुलना में अग्रेसर श्रेणी स्थान प्राप्त होगा और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण हो।

प्रस्तावना:-
भारत के कुल आबादी के लगभग 60% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती हैं और कृषि भारत के ग्रामीण क्षेत्र का मुख्य व्यवसाय है ।ग्राम निवासी इस व्यवसाय द्वरा बहूत आसानी सें जीवन का भरण पोषण करते हैं।देखा जाये तो भारतीय अर्थव्यवस्था प्रमूखता से खेती पर निर्भर हैं।हमारे देश के खुशहाली का रास्ता खेत-खलिहानो और गांवों से होकर गुजरता है।खेती ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार का एक मात्र साधन हैं। लेकीन इतने लोगो को व्यवसाय देने वाला यह क्षेत्र हमेशा ही उपेक्षा का शिकार भी रहा हैं।अंग्रेजो के आने के बाद भारत मे खेती की समस्या लगातार विक्राल रूप लेने लगी थी।किसानो की कमाई का बडा हिस्सा लगान चुकाने मे ही चला जाता था।उसी असंतोष का नतीजा था की किसान द्वारा आजादी की लडाई में बढ चढ कर हिस्सा लिया था। स्वातंत्रता संग्राम से उन्हे यह आशा थी की भारत के आजादी के उपरान्त उनकी समस्या दूर हो जायेगी। आजादी के उपरान्त कृषी एवम् किसान के लिये बहुतांश योजनाये बनाई एवम् काफी सुधार भी किया। जिसके करण वश कृषी क्षेत्र मे 52% रोजगार के अवसर निर्मित हुये।कृषि क्षेत्र का राष्ट्र के उत्पादन में सकल उपादन का सहभाग 15% है।जैसा की हम जानते राष्ट्र के निर्माण मे कृषि क्षेत्र से प्राप्त उत्पादन का सहभाग कम है ।अपेतू उसका महत्व बहूत है । वजह यह है की देश के खाद्यभंडार को आश्वस्त करने मे कृषि उपयोगी सिद्ध होता है।जिस के द्वारा कृषि से संबधीत उद्योग एवम् व्यवसाय क्षेत्र मे कच्ची सामुग्री उपल्बधता मे कृषि महत्त्वपुर्ण भूमिका अदा करती है।उसी प्रकार कृषि ग्रामीण क्षेत्र मे गरीबी दूर करने हेतू कारगर सिद्ध होती है।

भारत भौगोलिक स्थिति के अनुसार विशाल जनसंख्या का देश हैं।1950 बाद कृषि में काफी बदलाव दिखाई दिए। पहली पंचवार्षिक योजना में कृषि के विकास को जादा महत्व दिया गया। जिसके कारण देश के अर्थव्यवस्था में उस समय कृषि का लिये 54% हिस्सा था।उद्योग एवम सेवा क्षेत्र से अनुक्रम नुसार 16% एवम 30% हिस्सेदारी थी।देश के किसान लोगो के लिए अधिक मात्रा में अनाज नहीं उगा पाते थे। क्योंकि खेती परंपरागत पध्दति से की जाती थी।जब से हम ने हरीत क्रांती अपनायी तबसे फसल की उपज में वृध्दी होने लगी और नई तकनिकी की उपयोगिता से देश खाद्यान भंडार क्षेत्र मे स्वयंपूर्ण हुए।इसके चलते देश का आयात -निर्यात में बदलाव आया।देश के निर्यात में कृषि का 10% हिस्सा था।

कृषि क्षेत्र का विकास:-
1960 के बाद कृषि क्रान्ति के साथ नया दौर शुरू हुआ।घरेलू उत्पादन (G.D.P.)17% था। उस समय 52% लोग खेती में काम करते थे।1967-1968 में हरीत क्रान्ति दौर प्रारंभ हुआ। भारत में हरीत क्रान्ति के प्रारंभ का श्रेय एम .एस .स्वामीनाथन जाता हैं।जीने हरीत क्रान्ति का जनक माना जाता है। देश में संचित एवं असंचित कृषि क्षेत्र में अधिक उत्पादन देणे वाले संकरीत बिजी के उपयोग से फल उत्पादन में वृध्दि हुई।हरीत क्रान्ति से खेती में बदलाव हुआ। व्यवसायिक खेती होने लगी और किसानों के दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ।इसके चलते गन्न, गेहूं, ज्वार, मक्का, बाजरा के उत्पादन में भारत के खाद्यान्न

मे वृद्धि हुई।प्रति हेक्टर मात्रा में वृध्दी की वजह नई विकास योजना का लाभ होने लगा है। सिचाई सुविधा का तेजी से विस्थार किया गया था। 1951 में कुल सिचाई 223 लाख हेक्टर थी।जो बढकर 2009 में 1073 हेक्टर हुई। सिचाई का 1951 में 210 लाख हेक्टर थी। जो बढकर 2009 में 673 लाख हेक्टर हो गया 2013-14 में 265 मिलियन टन रिकार्ड उत्पादन हुआ। उसमे तिला का 32.4 मिलियन टन, दलहन का 19.5 मिलियन, मुगफल्ली का 73.17 मिलियन उत्पादन हुआ।

भारत मे खाद्य उत्पाद प्रगती:-

(मिलियन टन में)

वर्ष /फसल	चावल	गेहू	दाल
1960-61	35	11	13
1990-91	75	55	14
2009-10	89	81	15
2010-11	96	86	18
2018-19	113	102	24

कृषि उत्पादन संबंधित सांख्यिकी तालिका भारत में कृषि उत्पादन में विकास दर्शाती हैं।कृषि संसाधन उपयोग हेतू समय समय पर आधुनिक तंत्रज्ञान विकसित कृषि संसाधन का उपयोग ग्राह्य हैं।कृषी क्षेत्र मे दो वर्ष विकास दर हासिल करने के बाद 2018 -2019 मे कृषि क्षेत्र की वास्तविक विकास दर कम होकर 2% प्रतिशत हो गयी|

कृषी क्षेत्र में आधुनिकता की पहल:-

कृषि मे फसल की उत्पादन क्षमता बढाई जाये इस दृष्टी से उन्नत बीज प्रजातीया, नविनतम तकनिक, और फसल संरक्षण बीमा योजना थी आवश्यक हैं । ठिक उसी तरह खेती में आधुनिकत्तम कृषि तंत्रो का प्रयोग भी अति महत्त्वपूर्ण हैं।उन्नत कृषि यंत्रो का प्रयोग मानव श्रम कम करणे तथा कार्य की गुणवत्ता समय एवंम् ऊर्जा की बचत के लिए होता है।आज खेती का अधिकार काम मशीन से किया जाता है ।फसलो की बुवाई के लिए दो तीन बार जुदाई फिर डिक्स- हैरो द्वारा जुताई तथा अंत में खेत को समतल के लिये पटेला चलाया जाता है। खेत तयार करने के लिए रोटावेटर का प्रयोग किया जाता है। डिक्स-हैरो तथा दो बार कल्टी वेटर के बराबरी की जुताई एक ही बार में करता है। उसके द्वारा धान की रोपाई की जाती है इस मशीन से 50-60 % समय और 40-60%ऊर्जा बचत होती है और उत्पादन मे बढोत्तरी होती है।किसान द्वारा खेती में आधुनिक सयंत्रो का उपयोग में पहले के मुकाबले वृद्धी दिखाई दी।उसी प्रकार 1975 से 2005 के दौरान किसान द्वारा खेती मे आधुनिक संयंत्र का उपयोग से उत्पादन मे द्विगुणित वृद्धी हुयी।1975 से 2005 मे आधुनिक तंत्रज्ञान का उपयोग स्वीकार करने से चावल का उत्पादन 4 लाख 23टन और गेहू का उत्पादन 5 लाख 90टन बढोत्तर उत्पादन हुआ है ।इसके अलावा उत्पादन का मूल्य 241 कोटी और 636 कोटी 80 लाख क्रमानुसार है ।उसी प्रकार भारत की जनखंख्या वृद्धी हुयी जो की आज 130 कोटी हैं।उसे खाद्य भंडार के वृध्दी से लाभ हुआ। भारत चावल ,गहू, मक्का के अन्नाज में स्वयंपूर्ण हुआ। तेलजन्य बीज और दलहन उत्पादन में पीछे है जो की उत्पादकता बढाने के लिए अधिक प्रयास करने की आवश्यकता हैं।

आर्थिक लाभ:-

भारत विश्व में तेजी से बढने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था में से एक हैं। 2017-18 में भारत का जी डी पी 7.2 था। 2018-19 में 6.8 था।जो की मामूली परिवर्तन था जिसका असर सभी क्षेत्र पर दिखाई दिया।पिछले पाच वर्ष के दौरान 2014-15 कृषि विकास दर उच्च रही।6.8 से वृद्धी हुई और विकास दर 7.5 रहा।2018-19 में रब्बी फसलो में कमी आयी।

कृषि के क्षेत्र में पिछले दो वर्ष में अच्छा विकास दर हासिल करने के बाद 2018-19 में कृषि और सहाय्यक क्षेत्र की वास्तविक विकास दर 2.9% हो गयी।2018-19 में खाद्यान का उत्पादन 291 मिलीयन टन रहा। देश में इतना अनाज भांडार उपल्ब्ध रहते हुये। विश्व भुखमरी सांख्यिकीय 2019 के नुसार भारत 102 स्थान पर था।जो की अन्य पडोसी राष्ट्र के तुलनात्मक दृष्टीसे पिछडा हुआ था। जिसमे बांगलादेश 88, पाकिस्तान94, नेपाल 73 , श्रीलंका 66 क्रम पर हैं।वर्ष 2015-16 में विश्व के कुल आबदी से 80 कोटी आबाजी भुखमरी से ग्रस्थ थी। जो की भारत मे 19.46 कोटी थी। आज विकास दर 2% पहुंचा और बेरोजगारी 11% है।महामारी के स्थिती में CII की रिपोमे बताती है की 15 मई तर 30 करोड लोगो की नौकरीया जा चुकी होगी।जो की इस समय की भयावय स्थिती उत्पन्न होते हुये दिखाई दे रही हैं।जिसका परिणाम भारत के अर्थव्यवस्था पर दिखाई देगा। भारत सरकार से यह अनुग्रह हैं की इन बेरोजगार को फिरसे काम

उपल्ब्ध हो इस लिए कृषि के संबंधित योजना से प्रेरीत किया जाए। देश के मानवी संसाधन का उपयोग कर देश को विकसित देशो के अग्रेसर श्रेणी के सूची में स्थान प्राप्ति हेतू प्रयत्न करे।जिस का एक प्रमुख क्षेत्र कृषि हैं। कृषि क्षेत्र के द्वारा भारत की अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाया जाना चाहिए। तभी आत्मनिर्भर भारत का निर्माण होगा।

भारत सरकार को कृषि क्षेत्र को बढावा देने हेतू सुझाव :-

1. आन्नाज के आधारभूत मुल्य बढाया जाये।
2. बँक से कम ब्याज दर में ऋण उपल्ब्ध होना चाहिए।
3. सिचाई सुविधा और रासायनिक खद में सब्सिडी उपल्ब्ध होनी चाहिए।
4. आधुनिक खेती के लिए सरकार द्वारा किसान को उपकरण कम दर उपल्ब्ध होने चाहिए।
5. बीज की खोज संबंधित कृषि वैज्ञानिक संशोधन संस्था का विस्तार होना चाहिए।
6. विपणन और मंडीओ में भांडार उपल्ब्ध होने चाहिए।
7. किसान को कृषि संबंधित जानकारी के लिए मुफ्त इरनेट सेवा देनी चाहिए।
8. कृषि को औद्योगिक दर्जा मिलना चाहिए।

निष्कर्ष:-

उपरोक्त जानकारी हमे यह दिखाई देता हैं की कृषि एवंम् किसान भारत के विकास आधार हैं। आत्मनिर्भर भारत के निर्माण हेतू। कृषि को आधुनिकीकरण की संरचना मे ढालना आवश्यक हैं। उन्नत कृषि के माध्यम को अपनाया जाना चाहिए।मानवी संसाधन का उचित तरह से उपयोग कीया जाना चाहिए। नविनतम् योजना का प्रारंभ कर के आर्थिक दृष्टी से कृषि क्षेत्र की सहाय्यता कर कृषि उन्नती हेतू प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

- कविमंडल , कृषि अर्थशास्त्र, पिंपळापुरे पब्लिकेशन,नागपूर,2018.
- जिभकाटे,बी.एल., भारतीय अर्थशास्त्र, विश्व पब्लिशर्स, नागपूर.2017.
- झामरे,, भारतीय अर्थशास्त्र, पिंपळापुरे पब्लिकेशन,नागपूर.2018.
- कुरुक्षेत्र, वर्ष 62,अंक 4,5, फरवरी, मार्च 2016.
- योजना,वर्ष 44,अंक5, डिसेंबर 2016.
- चालू घडामोडी, पृथ्वी पब्लिकेशन,पूणे.2019.
- https:// hi.m.भारतीय कृषि,(8जुलै2020).
- https://hi.m. भारतीय अर्थव्यवस्था,(14जुलै2020).
- www.jagaranjosh.com,(13जुलै 2020).